प्रश्न :- रीतिकाल का वीरकाव्य के प्रमुख कवि और उनका साहित्य बतायें ?

उत्तर:- शेषभाग

भूषण के ग्रंथ :-

कवि भूषण द्वारा रचित ग्रन्थों की संख्या छः बतायी जाती है — 1. शिवराज - भूषण 2. भूषण - हजारा 3. भूषण - उल्लास 4. दूषण - उल्लास 5. शिवा - बावनी तथा 6. छत्रसाल - दशक। इनमें से 'भूषण - हजारा', 'भूषण - उल्लास' और दूषण - उल्लास' अप्राप्य हैं। शिवराज - भूषण अलंकार ग्रन्थ के रूप में लिखा गया है, इस ग्रन्थ का शास्त्रीय भाग भले ही स्तरीय न हो, किन्तु लक्षणों के उदाहरणों के रूप में प्रस्तुत वीर - काव्य निश्चित - रूप से मौलिक और स्तरीय कहा जा सकता है। वस्तुतः भूषण का उद्देश्य यहाँ लक्षण - ग्रन्थ लिखना नहीं है, इस बहाने अपनी वीरोपासक प्रतिभा का प्रदर्शन करना है। इस ग्रन्थ में लिखित छन्दों में शिवाजी और उनके वंश - परिचय के साथ उनके जीवन से सम्बन्धित प्रमुख घटनाओं का वर्णन किया गया है। 'शिवा - बावनी' में शिवाजी और शाहूजी की प्रशस्ति के बावन छन्दों का संकलन है। इन छन्दों की भाषा वीर - रस के उपयुक्त चारण - भाटों जैसी है। ओज - गुण एवं अपरिमित उत्साह - भाव की अभिव्यक्ति तथा आलम्बन के प्रति वास्तविक श्रद्धा की व्यंजना के कारण ये छन्द रीतिकालीन वीर - काव्य की अमूल्य निधि कहे जायेंगे। 'छत्रसाल - दशक' में दस छन्दों में महाराज छत्रसाल बुन्देला का गुणगान किया गया है। इसके अतिरिक्त स्फुट छन्द भी प्राप्त हुए हैं। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र की दृष्टि में 'शिवा - बावनी' और 'छत्रसाल - दशक दोनों पुस्तकें भूषण की पुस्तकाकार

कृतियाँ नहीं हैं। उनके अनुसार भूषण का एक ही ग्रन्थ प्राप्त है – "शिवराज-भूषण" या "शिवभूषण"। इनके अतिरिक्त उनकी वीर-शृंगार रसों की समन्वित प्रकीर्ण रचनाएँ हैं।

भूषण के काव्य में वीर रस :

भूषण की वीर-भावना कृत्रिम नहीं है और न ही अन्य कवियों की भाँति उनकी प्रशस्तियाँ ही झूठी हैं। आचार्य शुक्लजी ने लिखा है – "भूषण ने जिन दो नायकों की कृति को अपने वीर-काव्य का विषय बनाया था, वे अन्याय-दमन में तत्पर, हिन्दू-धर्म के संरक्षक, इतिहास-प्रसिद्ध वीर थे, उनके प्रति भक्ति और सम्मान की प्रतिष्ठा हिन्दू जनता के हृदय में उस समय भी थी और आगे भी बराबर बनी रही या बढ़ती गयी। इसी से भूषण के वीर-रस के उद्गार सारी जनता के हृदय की सम्पत्ति बन गये, भूषण की कविता कवि-कीर्ति सम्बन्धी एक अविचल सत्य का दृष्टान्त है, जिसकी रचना को जनता का हृदय स्वीकार करेगा, उस कवि की कीर्ति तब तक बराबर बनी रहेगी।" भूषण का वीर-साहित्य इतिहास और काव्य का अपूर्व संगम है, छत्रपति शिवाजी महाराज की पराक्रम-गाथा में ऐतिहासिक सत्य को जीवन्त रख गया है यद्यपि कहीं-कहीं अतिशयोक्तिपूर्ण शब्दों का प्रयोग अवश्य है, किन्तु वे शैली के उपादान हैं, शैली में चाटुकारिता का भाव नहीं, राष्ट्रीयता का ओज है, स्वधर्म, स्वदेश के उद्धारक के प्रति भक्ति-भाव है। जैसे –

"इन्द्र जिमि जंभ पर, बाडव सुअंभ पर, रावन संदभ पर रघुकुलराज हैं।
पौन बारिवाह पर, संभु रतिनाह पर, ज्यों सहस्रबाहु पर राम द्विजराज हैं।

दावा द्रुम दंड पर, चीता मृग झुंड पर, भूषण वितुंड पर, जैसे मृगराज हैं।
तेज तम अंस पर, कान्ह जिमि कंस पर, त्यों मलेच्छवंश पर, सेर सिवराज हैं।

स्वधर्म एवं स्वदेश का यह भक्ति-भाव जितना स्पष्ट है, उतना ही देश के शत्रु के प्रति क्रोध भी उग्र है। उग्र क्रोध की अभिव्यक्ति में भी भूषण ने ऐतिहासिक सत्य का विपर्यास नहीं किया है। औरंगजेब की कायरता, दांभिकता का पर्दाफाश करते हुए भूषण कहते हैं:—

"किबले के ठौर बाप बादशाह साहिजहाँ,
ताको कैद कियो मानो मक्के आगि लाई है।
बड़ा भाई दारा वाको पकरि के कैद कियो,
मेहरो नहिं माँ को जायो सगो भाई है।
भूषण सुकवि कहैं सुनो नवरंग जेब,
ऐसे काम किए फिरि पातसाही पाई है।"

भूषण की कविता में आये वेद, पुराण, हिन्दू, तिलक, चोटी शब्दों को लेकर उन पर जातीयता और साम्प्रदायिकता के आरोप किये जाते हैं। सच तो यह है कि अपने संकीर्ण दृष्टिकोण का आरोप दूसरों पर करना आज "धर्म निरपेक्षता और आधुनिकता" की पहचान बन गयी है। इस संदर्भ में अधिक विश्लेषण की जरूरत नहीं, केवल इतना ही कहना पर्याप्त है कि औरंगजेब की धर्मान्धता की निन्दा करना और शिवाजी को हिन्दू जाति के उन्नायक के रूप में देखना अगर भूषण के दृष्टिकोण की संकीर्णता का परिचय है, तो हमारे देश की स्वतंत्रता के लिए आत्मबलिदान करने वाले अँग्रेजों के शत्रु संकीर्ण मनोवृत्ति के कहलाये जाने चाहिए। जातीय दृष्टिकोण से इतिहास की ओर देखना इतिहास की हत्या है, निष्पक्षता के अभाव में इतिहास सदा कठपुतलियों का खेल बन जाता है। भूषण राजदरबारी कवि अवश्य हैं,

उनका सत्य हमारी तथाकथित विशाल दृष्टि के सामने संकीर्ण लगे, तो दोष भूषण का कदापि नहीं है।

भूषण का राष्ट्रप्रेम :

भूषण की वीर-भावना उनके स्वाभिमान और सजग राष्ट्रीयता की उपज है, उनका उद्देश्य एक ओर वीरों के प्रति श्रद्धा-भाव अभिव्यक्त करना है, तो दूसरी ओर तत्कालीन अचेत समाज में वीरश्री का संचार करना भी है। इसीलिए उन्होंने अभिव्यक्ति पक्ष को निखारा है। व्याकरण-शास्त्रियों की दृष्टि से उन्होंने ब्रजभाषा को तोड़-मरोड़ा है, किन्तु उन पर यह आरोप करते समय यह ध्यान देना आवश्यक है कि कवि ने भाषा की सारी शक्तियों को वीर-रस के होम में झोंक दिया है, उसने उसकी अर्थ-शक्ति से ही काम नहीं लिया, अपितु उसके नाद और शब्द-रूपों से भी यथेष्ट-रूप में काम लिया है, 'ओज' उनके उद्देश्य की पूर्ति का एक अभिन्न अंग है। जहाँ तक शब्दों की तोड़-मरोड़ उनके 'वीर भाव' की सफल अभिव्यक्ति में सहायक रही है, वहाँ तक यह भूषण की भाषा-शैली का गुण विशेष है, दोष नहीं।

भूषण की भाषा :

भूषण की भाषा में अरबी-फारसी के शब्द बाहुल्य को दोष के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, लेकिन यह कवि का दोष नहीं, उसकी जनोन्मुखता की पहचान है। भूषण जिस महाराष्ट्र क्षेत्र में काव्य सृजन करते थे, उसकी मराठी भाषा में भी अरबी-फारसी के शब्दों का अत्यधिक मात्रा में प्रचलन था।

अपनी कविता अधिकाधिक जनमानस तक पहुँचे, यही कामना इन शब्दों की बहुलता के पीछे विद्यमान रही है,

इस तरह निष्कर्षरूपेण कह सकते हैं कि भूषण रीति या श्रृंगारकालीन एक सजग-सचेत राष्ट्रीयता, वीरता और साहसिकता के सफल अभिव्यक्ता कवि थे। वे अपने युग के सच्चे प्रतिनिधि थे। इनमें महापुरुषों के सम्मुख नत होने वाली श्रद्धा थी, जनता की पीड़ा के प्रति सहानुभूति थी, अत्याचार के प्रति आक्रोश था और अत्याचारी के प्रति विद्रोह था।

(शेषभाग बचा है)

पता :-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.M)
मो० न० - 7909046087
दिनांक - 17.02.2022